एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अनार में फसल नियमन-शुष्क प्रदेशों में अनार की खेती

(*अमृतपाल सिंह[1], शीतल रावत[1], वंदना[2] एवं मंजु वर्मा[1])
[1]स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
[2]कृषि विद्यावाचस्पति, असम कृषि विश्वविद्यालय, असम
* aman.raman13@gmail.com

अनार शुष्क एवं अर्ध शुष्क प्रदेश का एक महत्वपूर्ण फल हैं, जो की भारत के विभिन्न राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और राजस्थान में बड़े पैमाने में लगाया जाता है।

कठोर जलवायु परस्थितियों का सामना करने की छमता और कम लागत में उच्च उत्पादन देने के कारण देश के शुष्क प्रदेशों में इसके उत्पादन में वृद्धि हो रही है।अनार की खेती राजस्थान मेंमुख्यतः जालोर, जेसलमेर, जोधपुर, सिरोही, नागोर, राजसमन्द, पाली, जयपुर और टोंक आदि जिलोंके कुल 7474.8 है. क्षेत्र में की जाती है।अनार में वर्षभर पुष्प एवं फल उत्पादन करने की प्रवर्ती होती है। अनार में पुष्प नयी तथा पुरानीशाखाओं में वर्ष में एक, दो या तीन बार क्रमश: जून–जुलाई (मृग बहार), सितम्बर-अक्टूबर (हस्त बहार), तथा जनवरी-फ़रवरी (अम्बे बहार) में आते हैं, जो की फलों की किस्म, जलवायु एवं प्रबंधन कार्यप्रणाली पर निर्भर करता है।अनार में फसल नियमन का मुख्य उदेश्य फलो और फूलों के उगने के समय को बदल कर अधिक गुणवत्ता वले फल और अधिक उत्पादन प्राप्त करना है.

फसल नियमन से वर्षभरमें तीन बार निम्न गुणवत्ता की फसल लेने की जगह केवल एक बार फसल लेने से अधिक गुणवत्ता के फल प्राप्त किये जा सकते है;और फसल लेने के समय का निर्धारण पानी की उप्लब्धता, कीट-व्याधि के आसारऔर बाज़ार की मांग आदि पर निर्भर करता है।

बहार	फूलो के लगने का समय	फलों के लगने का समय	गुणवत्ता
अम्बे बहार	जनवरी-फ़रवरी	जुलाई-सितम्बर	निम्न
मृग बहार	जून–जुलाई	नवम्बर-जनवरी	उच्च
हस्त बहार	सितम्बर-अक्टूबर	फ़रवरी-अप्रैल	मध्यम

शुष्क एवं अर्ध शुष्क प्रदेशों में मुख्यतः मृग बहार ली जाती है। जिसमे जून-जुलाई में पुष्प उत्पादन के पश्चात् दिसम्बर-फरबरी में फल लगते है।मृग बहार लेने के लिए गर्मियों के महीने में (मई-जून) पानी की उप्लब्धता को घटा दिया जाता है या फिर एथ्रल का छिडकाव किया जाता है। जिससे की पेड़ अपनी पत्तियां गिरा कर सुप्त अवस्था में चले जाते है। मानसून के आने पर, पेड़ों में पर्याप्त सिंचाई के साथ उपयुक्त मात्र में उर्वरक डाले जाते हैं। पुष्प एवं फल उत्पादन जून-अगस्त के महीने से शुरू हो जाता है। फलों का पकना और कटाव दिसम्बर से फरवरी तक चलता है।

फसल नियमन: सिंचाई को रोकना-- हल्की कटाई-छटाई -- एथ्रल का छिडकाव -- पत्तियों का गिरना -- नयी पत्तियों का आना -- नयी शाखाओं में पुष्प लगना – फलों का लगना

पुष्प नियमन में एथ्रल की भूमिका-

पेड़ पे एथ्रल का छिडकाव करने से पेड़ की सभी पत्तियां झड जाती है और पेड़ को तनाव की स्थिति में आ जाता है। एथ्रल का छिडकाव करने सेपुंकेसर का विकास रुक जाता है जो लिंग अनुपात को प्रभावित करता है।

अनार में तनाव की उपयोगिता –

अनार में तनाव, पुष्प खिलने के समय को परिवर्तित करने में विशेष भूमिका रखता है इससे पेड़ में एक साथ बहुल मात्र में पुष्प खिलते है तथा पुष्प के लिंग अनुपात और फलो के उत्पादन में भीअनुकूल प्रभाव पड़ता है पेड़ में प्रोलिन (तनाव के समय उत्पन्न होने वाला प्रोटीन) की मात्रा और पुष्प संख्या के बीच एक धनात्मक पारस्परिक सम्बन्ध पाया गया है।

फसल नियमन एवं गुणवत्ता में सुधार-

बोरोन, जिंक व कैल्शियम की 2मिली /ली मात्र को 20 दिन के अन्तराल में डालने से फलों की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है। फलो को कागज़ से ढक के समान आकार के, अच्छे रंग (बिना किसी दाग धब्बे) के फल प्राप्त किये जा सकते है।फलों के पूर्ण रूप से विकसित होने के पश्चात् ही उन्हें ढकना चाहिए। अनार का एक पेड़ औसतः 60-80 निर्यात करने की गुणवत्ता वाले फल उत्पादित कर सकता है, जिससे अधिक संख्या में फल होने पर उनकी छटाई कर देनी चाहिए।तनों में अधिक फल होने की दशा में निम्न और अनियमित फल उत्पादन होने की समस्या होती है।

निष्कर्ष-

अनार में बहार नियमन उच्च गुणवत्ता और उन्नत प्रबंधन के लिए एक उपयोगी पद्धति है। बहार नियमन ना करने की दशा में पेड़ पूरे वर्ष निम्न गुणवत्ता वाले फलों का उत्पादन करता है जो की आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं है।इसी कारण, पानी की उप्लब्धता,कीट-व्याधि के आसारऔर बाज़ार की मांग को देखते हुए एक निश्चित मौसम में उच्च कोटि की फसल ली जा सकती है।इसके अलावा फसल नियमनफल के फटने, धुप से झुलसने जैसे कार्यकी विकारों को भी कम करने में प्रभावशाली है।

E-Magazine for Agricultural Articles